FUNCTIONALISM
(प्रकार्यवाद)

Basic Concept:

मनोविज्ञान में प्रकार्यवाद सम्प्रदाय का प्रारंभ और विकास अमेरिका में हुआ। इस सम्प्रदाय का आरम्भ सन् 1898 के लगभग शिकागो यूनिवर्सिटी से माना जाता है इसलिए इसे शिकागो सम्प्रदाय (Chicago School) भी कहा जाता है। विलियम जेम्स द्वारा प्रकार्यवाद की स्थापना अमेरिका के हारवर्ड विश्वविद्यालय में की गयी थी परन्तु इसका विकास शिकागो विश्वविद्यालय में जॉन डीवी (1859-1952) जेम्स रौलैंड्स Angell (James Rowland angell) (1867-1949) तथा हार्वे ए॰ कार (1873-1954) के द्वारा सम्मिलित रूप से मनोविज्ञान का अध्ययन किया और प्रकार्यवाद को जन्म दिया।

इस विषय में यह उल्लेखनीय है कि प्रकार्यवाद एक ऐसा स्कूल या सम्प्रदाय है जिसकी उत्पत्ति संरचनावाद के वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक उपागम के विरोध में हुआ।

संरचनावाद में मानसिक तत्वों व प्रक्रियाओं को वस्तु के रूप में स्वीकार करता है जबकि प्रकार्यवाद में इनको इन रूप में नहीं माना गया।

प्रकार्यवाद के अनुसार मानसिक तत्व व प्रक्रियाएँ गतिशील होती हैं, एक निश्चित उद्देश्य के लिये होती हैं और निरन्तर घटित होती हैं। इनके अध्ययन

Scanned with CamScanner

के फलस्वरूप सफलता मिली है। अन्य शब्दों में इनके अध्ययन की दार्शनिक पृष्ठभूमि फलवाद (Pragmatism) है।

शिकागो यूनिवर्सिटी के अतिरिक्त कोलम्बिया यूनिवर्सिटी में भी प्रकार्यवादी अध्ययन हुआ है।

प्रकार्यवादी मनोविज्ञान के अंतर्गत मानसिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। प्रकार्यवाद का कार्य यह जानना है कि मानसिक क्रियायें 'कैसे' और 'क्यों' होती हैं? इनकी उपयोगिता क्या है? प्रकार्यवाद में मन की संरचना की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। इसमें यह माना जाता है कि 'मन' और 'शरीर' में ऐसा समंजन (Adjustment) है, जिसके आधार पर समस्त मानसिक क्रियायें जैसे- प्रत्यक्षण, स्मृति, भाव, निर्णय, इच्छा आदि क्रियायें होती हैं।

अन्य शब्दों में कहा जा सकता है कि प्रकार्यवाद का उद्देश्य यह है कि व्यक्ति अपने पर्यावरण से किस प्रकार समंजन स्थापित करता है।

प्रकार्यवाद 'मन' और 'शरीर' को दो भिन्न तत्व नहीं मानता है वरन इनको ऐसा तन्त्र मानता है जो बाह्य दृष्टि से दो प्रतीत होते हैं, परन्तु वास्तव में एक ही हैं। समस्त मानसिक क्रियायें दोनों के समंजन से बनती हैं। इनका अध्ययन प्रकार्यवाद की विषय वस्तु है।

Scanned with CamScanner

Contribution of Functionalism
(प्रकार्यवाद का योगदान)

Page No. 03
Date

प्रकार्यवाद का आधुनिक मनोविज्ञान में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान है। प्रकार्यवाद ने आधुनिक मनोविज्ञान को जो दिशा दिया है उनका संक्षिप्त विवेचन निम्नलिखित है—

(1) सम्पूर्ण अध्ययन (Total Study)—

प्रकार्यवाद ने सम्पूर्ण व्यक्ति के अध्ययन पर बल दिया है और इस तथ्य पर प्रकाश डाला कि व्यक्ति और उसके पर्यावरण दोनों का पूरा अध्ययन होना चाहिए ताकि व्यक्ति के मनोविज्ञान को अच्छी प्रकार से समझा जा सके।

2. मन और शरीर (Mind and Body) :-

प्रकार्यवाद ने मन और शरीर को एक तत्व के रूप में स्वीकार किया है। मन और शरीर में आपस में सम्बन्ध होता है और मन के बिना शरीर-शरीर के बिना मन अधूरा होता है। व्यक्ति के अध्ययन के लिये मनो वैज्ञानिकों और शारीरिक दोनों पक्षों पर ध्यान देना आवश्यक है। इस प्रकार मनोविज्ञान की लोकप्रियता बढ़ी और चिकित्सकों, मानवशास्त्रियों और जीवविज्ञान शास्त्रियों इत्यादि की रुचि मनोविज्ञान की ओर हुई।

3. समंजन (Adjustment) :-

प्रकार्यवाद ने समंजन पर बल दिया है। आधुनिक मनोविज्ञान में समंजन मनोविज्ञान का क्षेत्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रकार्यवाद ने यह माना की व्यक्ति

Scanned with CamScanner

अपने जीवन और पर्यावरण में संतोषप्रद समायोजन प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार प्रकार्यवादियों ने समायोजन पर बल दिया और गत्यात्मक मनोविज्ञान के विकास में सहायता दी।

4. व्यावहारिक मनोविज्ञान (Applied Psychology):-

प्रकार्यवाद का चतुर्थ योगदान यह है कि इसके द्वारा बाल मनोविज्ञान, शिक्षा मनोविज्ञान, पशु मनोविज्ञान इत्यादि का विकास हुआ और सीखना, बुद्धि, एवं वैयक्तिक भिन्नता के परीक्षणों का विकास हुआ।

निष्कर्षतः उपरोक्त समीक्षाओं को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि व्यवहृत मनोविज्ञान (Applied psychology) का समस्त क्षेत्र प्रकार्यवाद की देन है। प्रकार्यवाद ने ही व्यवहारवाद के लिए पृष्ठभूमि तैयार की।

19/05/20
Dr. S. K. Suman
Asst. Professor
Dept. of Psychology
Marwari College, Darbhanga

Scanned with CamScanner